Continue....

अर्थात् आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुःख तथा अपवर्ग नामक बारह पदार्थ प्रमेय हैं।

यहाँ भी प्रश्न उठना स्वाभाविक है क्योंकि प्रमेय के लक्षण के बिना प्रमेयों की गिनती करना अप्रासंगिक है। इसका समाधान भाष्यकार ने 1.1.9 वें सूत्र के अवतरण में कर दिया है-

"किं पुनरनेन प्रमाणेनार्थजातं प्रमातव्यमिति ?"[1]

अर्थात् इस प्रमाण पदार्थ से किन जानने योग्य पदार्थों को जानना है। अतः यहाँ स्पष्ट है कि प्रमेय से आशय वे पदार्थ जो ज्ञेय हैं। न्यायमञ्जरी में कहा गया है-

"तत्परिच्छेद्यमात्मादि प्रमेयम्।"[2]

उन प्रमाणों के द्वारा ज्ञेय आत्मा आदि पदार्थ या विषय प्रमेय हैं सरल शब्दों में कहें तो 'प्रमेय वह है जिसके मिथ्याज्ञान से संसार का सागर तरङ्गित होता है और जिनके तत्वज्ञान से वह सागर सदा के लिये सूख जाता है।[3]

③ संशय :- संशय का लक्षण करते हुए न्यायसूत्रकार ने कहा है-

"समानानेकधर्मोपपत्तेर्विप्रतिपत्तेरुपलब्ध्यनुपलब्ध्यव्यवस्थातश्चविशेषापेक्षो विमर्शः संशयः।"[4]

तात्पर्य यह है कि एक धर्म में अनेक विरुद्ध धर्मों को विषय करने वाला 'यह क्या है' ऐसा ज्ञान संशय है। यह संशय पदार्थ का सामान्य लक्षण है। जो साधारण धर्म के ज्ञान से, तथा अनेक धर्म के ज्ञान से, एवं विरुद्ध दो कोटि को विषय करने वाले वाक्यों से उत्पन्न हुए ज्ञान से भी, प्राप्ति व अप्राप्ति इन दोनों के एक पक्ष में स्थिर न होने से विशेषधर्म के ज्ञान की आवश्यकता रखने वाला..

1- न्या. भा., पृ० - 41
2- न्या. म., पृ० - 24
3- त. भा., पृ० - 181
4- न्या. सू., 1.1.23

विरुद्ध दो पक्षों को विषय करने वाला ज्ञान संशय कहलाता है। न्यायभाष्यकार ने 'समानधर्मोपपत्तेर्विशेषापेक्षो विमर्श: संशय'[1] कहकर समान धर्म के ज्ञान से, विशेष धर्म के ज्ञान की अपेक्षा रखने वाले ज्ञान को प्रथम संशय कहा है। 'विशेषापेक्षो विमर्श: संशय:'[2] कहकर 'अपेक्षा बुद्धि'[3] से उत्पन्न संदेह को विशेषापेक्ष संशय कहा है। परस्पर विरोधी पदार्थों को साथ देखने से भी संशय होता है। दो में से एक का निश्चय न होना भी संशय है। अनुपलब्धि की अव्यवस्था से भी संशय होता है।

न्यायमञ्जरीकार ने 'नानार्थविमर्श: संशय:'[4] अर्थात् अनेक विकल्पों के विषय में ऊहापोह को संशय कहा है।

तर्कभाषाकार केशवमिश्र ने 'एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्ध-नानार्थविमर्श: संशय:'[5] कहकर एक धर्मी में परस्पर विरुद्ध अनेक धर्मों के अवमर्श-बोध का नाम संशय बतलाया है।

(4)- प्रयोजन- अक्षपाद गौतम ने प्रयोजन का लक्षण दिया है-

'यमर्थमधिकृत्य प्रवर्तते तत्प्रयोजनम्।'[6]

तात्पर्य है कि संसार के प्राणिमात्र की जिस विषय में साधारण-रूप से प्रवृत्ति होती है, उसे प्रयोजन कहते हैं।

1- न्या॰ भा॰, पृ॰ - 68

2- न्या॰ भा॰, पृ॰ - 68

3- समानमनयोर्धर्ममुपलभे विशेषमन्यतरस्य नोपलभ- इत्येषा बुद्धि: अपेक्षा। न्या॰ भा॰, पृ॰ - 68

4- न्या॰ म॰, पृ॰ - 24

5- त॰ भा॰, पृ॰ - 334

6- न्या॰ सू॰ - 1.1.24